ISSN No. 2231-0045 VOL.II* ISSUE-I*AUGUST-2013
Periodic Research

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों का विपणन (मरवाही वनमंडल के विशेष संदर्भ में)

मुकेश कुमार
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय दन्ते"वरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दन्तेवाड़ा (छ0ग0)

डी0 पी0 देवांगन
वरिष्ठ सहा0 प्राध्यापक (वाणिज्य) शा0 स्वा0 बिलासा कन्या स्ना0 महावि0 बिलासपुर छ0ग0)

सारांश

राज्य में वनौषधियों का विपणन छ.ग. लघु वनोपज संघ (व्यापार एवं विकास) मर्यादित रायपुर द्वारा **''छत्तीसगढ़ हर्बल्स''** ब्रान्ड नाम से किया जाता है। उक्त कार्य प्रदेश में संचालित **NWFP मार्ट** (Whole Seller) एवं **जिला यूनियन संजीवनी** (Retail Outlet) के माध्यम से स्थानीय स्तर से लेकर अर्न्तराज्यीय एवं राष्ट्रोय स्तर पर किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र मरवाही वनमण्डल अर्न्तगत ग्राम केवची में संचालित वनौषधि विक्रय केन्द्र से प्राप्त आकड़े के आधार पर तैयार किया गया है। इससे ज्ञात हुआ की प्रदेश में विशेषकर मरवाही वनांचल क्षेत्रों में वनौषधि व्यवसाय के विकास विस्तार की अपार संभावनाएं विद्यमान है यदि क्षेत्र वासियों में इसके प्रति जागरूकता लाकर आवश्यक मार्गदर्शन एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर वनौषधि कारोबार को नई ऊचाई दी जा सकती है। जिससे क्षेत्रीय विकास के साथ–साथ प्रदेश के विकास का नये आयाम स्थापित हो सकेंगे।

मुख्य शब्द : अर्थ व्यवस्था, विपणन, हर्बल टेस्ट

प्रस्तावना

वनौषधि की अवधारणा के संबंध में किसी प्रकार का लिखित साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है कि औषधी का उपयोग कब से मानव करता आया है एवं इसकी शुरूवात किसने की और कैसे हुआ परन्तु विभिन्न धार्मिक ग्रंथो, विद्वानों, लेखकों, ऋषि–मुनियों एवं अन्य महात्माओं द्वारा रचित एवं संकलित लेखों आदि के माध्यम से सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत एक बात स्पष्ट परिलक्षित होती है कि जगत सृष्टा ने जब सृष्टि के प्रारम्भ मे पंचमहाभूत तथा उससे उत्पन्न संदर्भो को बनाया तभी से प्राणियों के साधनों का भी ज्ञान कराया। अर्थात सर्वज्ञान सम्पन्न स्वयंभू ब्रम्हा ने लोगों को उत्पन्न करने की इच्छा से आयुर्वेद की रचना की जिसमे औषधी संबंधी जानकारी का उल्लेख किया गया है उसके बाद संपूर्ण प्राणियों की रचना की। अतः मानव या प्राणी मात्र सृष्टि के आरंभ से ही अपने हित या अहित का ज्ञान करता आया है। अपनी आयु की दृष्टि और उत्रोत्तर नवीन–नवीन उपांगो का अवलंबन या अनुसंधान करता रहा है।

इस प्रकार प्राचीन समय से ही औषधी पौधें का मानव जाति के साथ अटूट संबंध रहा है। औषधीय एवं सुंगधीय पौधों से सम्पन्न हमारे दे"ा में वनौषधि का चिकित्सा जगत में अद्वितीय स्थान रहा है। कालांतर में औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण के फलस्वरूप चिकित्सा जगत में अवयवो की खोज तथा तत्काल निदान प्रक्रिया ने वनौषधि पर आधारित परम्परागत चिकित्सा पद्धति को गंभीर रूप से आहत किया है, परन्तु आधुनिक चिकित्सा पद्धति के बाह्य प्रभाव (Side effect) के परिणामो के प्रभाव से व्यक्ति परपंरागत जड़ी–बुटी की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यही कारण है कि वर्तमान समय में राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर हर्बल उत्पादों एवं जड़ी–बुटी की मॉग में उत्तरोतर वृद्धि हो रही हैं। इस समय वि"व में हर्बल मेडिसिन का बहुत बड़ा बाजार है, जो ऐलौपैथिक मेडिसिन की अपेक्षा कई गुना ज्यादा है। छ.ग. राज्य वनौषधि बोर्ड रायपुर की रिपोर्ट के अनुसार अब तक प्रदे"ा में 1525 औषधि प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है, जिसके और बढ़ने की संभावना है। फलतः हमारे दे"ा में भी वनौषधियों का विपणन विकास व विस्तार कर आयुर्वेद की ''सर्वे भवन्तु सुखनाः'' उक्ति को चरितार्थ किया जा सकता है, साथ ही अपनी अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ किया जा सकता है।

अध्ययन क्षत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र ग्राम केवंची जो बिलासपुर अमरकंटक मुख्य मार्ग पर बिलासपुर जिला मुख्यालय से लगभग 105 किमी. एवं पेन्ड्रारोड अमरकंटक मार्ग पेन्ड्रारोड से लगभग 25 किमी. की दूरी पर स्थित तिराहा संगम स्थल है जो

प्राकृतिक रूप से श्रृंगारित है, जो बरबस ही आंगतुको को आकर्षित करती है इसके अतिरिक्त अपने गर्भ में विविध प्रजाति के औषधि पौधें समाहित किए हुए है। यह ग्राम वनग्राम की श्रेणी में आता है यहां की अधिकां"ा जनसंख्या अपनी आजीविका हेतु कृषि एवं वनों पर निभर है। इस प्रकार यहॉ के लोगों द्वारा वनौषधिओं का एकत्रीकरण, संग्रहण एवं विक्रय करके जीवकोपार्जन किया जाता है। इसमें कुछ स्थानीय व्यक्ति संगठित होकर स्व–सहायता समूह बनाकर यह कार्य करते है, जिसमें से एक ठाकुर देवा स्वसहायता समूह है जिनके द्वारा केवची में औषधि उत्पादों का विक्रय किया जाता है। इस समूह में महिला एवं पुरूष दोनों मिलकर कार्य करते है यह समूह 8 मार्च 2010 से वनौषधि विक्रय कार्य से संलग्न है। जो मरवाही वनमंडल अंतर्गत जिला युनियन संजीवनी का संचालन करते है। इस समूह में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित कुल 12 सदस्य कार्यरत है। जिसमें से छः सदस्य गोड़ समुदाय के, दो–दो सदस्य भैना, एवं यादव तथा एक–एक सदस्य ब्राहमण एवं पनिका समुदाय से है। समूह के सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति अच्छी नहीं है समूह में केवल दो सदस्य हाईस्कूल पास है शेष सभी सदस्य निरक्षर है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. मरवाही वनमंडल क्षेत्र की वनौषधियों के विपणन का अध्ययन।
2. वनौषधि के विपणन संबंधी समस्याओं का मूल्यांकन करना।
3. वनौषधियों पर आधारित रोजगार की संभावनाओं का आंकलन।
4. वनौषधियों के विपणन विकास एवं संभावनाओं का अध्ययन।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक ऑकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक ऑकड़ो का संकलन मुख्यतः साक्षात्कार के माध्यम से एवं द्वितीयक ऑकड़े केंवची क्षेत्र के वनौषधि विपणन केन्द्रों से प्राप्त किये गये है। जिसके आधार पर मरवाही वनमंडल के पेन्ड्रारोड क्षेत्र केवंची के वनौषधि विक्रय केन्द्र का सूक्ष्म अध्ययन कर इसके वर्तमान स्वरूप एवं संभावनाओं पर प्रका"ा डाला गया।

वनौशधियों का विपणन :–

''विपणन सही उत्पाद (वस्तु) को सही व्यक्तियों तक सही समय पर सही कीमत पर, सही वितरण वाहिका द्वारा एवं सही संवर्द्धन द्वारा पहुंचाने की कला है।'' विपणन सामान्य व्यवहार में सर्वाधिक प्रचलन का शब्द है फिर भी इसके वास्तविक अर्थ से अनभिज्ञ है सबसे बड़ी विडम्बना या हास्यास्पद बात तो यह है कि अनेक ऐसे व्यक्ति भी विपणन के अर्थ से परिचित नहीं है जो कि दिन–रात विपणन के कार्य में लगे हुए है यहाँ तक की एक विक्रेता या विक्रय प्रबंधक विपणन का अर्थ केवल विक्रय से लेता है विपणन विशेषज्ञों का मत है कि व्यवहार में विपणन शब्द का प्रयोग प्रायः हर व्यक्ति ने अपनी स्थिति, योग्यता, पद, आवश्यकता एवं वातावरण के संदर्भ में एक नूतन अर्थो में किया है। वास्तव में विपणन क्रय, विक्रय, उत्पाद, नियोजन, विज्ञापन आदि तक सीमित न रहकर एक विस्तृत अर्थीय शब्द है जिसमें वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से पूर्व की जान वाली कियाओं से लेकर उनके वितरण और आवश्यक विक्रयोपरांत तक की सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है।

प्रदेश में वनौषधियों का विपणन छ.ग. लघुवनोपज संघ (व्यापार एवं विकास) मर्यादित रायपुर द्वारा किया जाता है। जो प्रदेश में एवं प्रदेश के बाहर अन्य राज्यो में विपणन किया जाता है, उक्त संस्था द्वारा औषधी उत्पादों का विक्रय मूल्य का निर्धारण, दिशा–निर्देशन एवं नियंत्रण किया जाता है। यह कार्य प्रदेश के शहरों में स्थापित NWFP(Non word Forest Product) मार्ट थोक विक्रय केन्द्र (Wholeseller) तथा स्थानीय स्तर पर गठित जिला युनियन संजीवनी (Retail outlet) के माध्यम से निष्पादित किये जाते है। प्रदेश में निर्मित उत्पादों को छ.ग. शासन द्वारा छत्तीसगढ़ हर्बल्स ब्राण्ड नाम दिया गया है। इसी नाम से विभिन्न हर्बल उत्पादों का विपणन किया जाता है। छ.ग. में निर्मित हर्बल उत्पादों का विपणन राज्य के स्थानीय स्तर से लेकर राज्य के बाहर अन्य प्रांतो में किया जाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में मरवाही वनमंडल अंतर्गत केवंची में स्थापित जिला युनियन संजीवनी द्वारा बेचे जाने वाले हर्बल उत्पाद जो विभिन्न प्रकार के रोगोपचार एवं उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु बनायें रखने मे उपयोगी है, जिनका विवरण इस प्रकार है :–

1.स्थानीय स्तर पर विक्रय

इससे आशय स्थानीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर औषधी उत्पादों का विक्रय करने से है। यहाँ केंवची में संजीवनी वनौषधि विक्रय केन्द्र स्थापित है जिसका संचालन ठाकुर देवा स्व–सहायता समूह द्वारा किया जाता है, जहाँ विविध प्रकार के औषधी उत्पादों का विक्रय किया जाता है इस संस्था द्वारा बेची जाने वाली हर्बल उत्पादों की सूची इस प्रकार है :–

सारणी क्रमांक 1
संजीवनी वनौषधि विक्रय केन्द्र केंवची द्वारा बेची जाने वाली हर्बल उत्पादों की सूची

क्रमांक	उत्पाद का नाम	उपयोग
1.	त्रिफला चूर्ण	पाचक के लिए
2.	शतावरी कल्प चूर्ण	महिलाओं के लिए
3.	अर्जुनत्क चूर्ण	श्वास संबंधी
4.	ब्लड प्रेशर नियामक चूर्ण	ब्लड प्रेशर दमन के लिए
5.	सर्दी खांसी नाशक चूर्ण	सर्दी खांसी दमन के लिए
6.	हवन सामग्री	पूजा हेतु
7.	पायोकिल दंत मंजन	दांत की सफाई हेतु
8.	मधुमेह नाशक चूर्ण	मधुमेहरोगी के लिए
9.	सफेद मूसली चूर्ण	शक्तिवर्धक
10.	हर्बल चाय	चुस्ती एवं स्फूती के लिए
11.	चर्म मल्हम	त्वचा रोग संबंधी
12.	महिला मित्र चूर्ण	महिलाओं के लिए
13.	अविपत्तिकरण चूर्ण	एसिडिटी के लिए
14.	आंवला चूर्ण	पाचन के लिए
15.	शीतोप्लादी चूर्ण	सर्दी खांसी बुखार नाशक
16.	नीम चूर्ण	त्वचा संबंधी

17.	कालमेघ चूर्ण	मलेरिया के लिए
18.	वातहर तेल/चूर्ण	गठिया/वातरोगी के लिए
19.	महाविष गर्भ तेल	गठिया रोगी के लिए
20.	बायो बीडंग चूर्ण	कृमि नाशक
21.	अश्वगंधा चूर्ण	शक्तिवर्धक के लिए
22.	इमली केन्डी	चाकलेट
23.	आंवला जूस	एसिडिटी कम करने के लिए
24.	आंवला मुरब्बा	एसिडिटी कम करने के लिए
25.	शतावरी चूर्ण	शक्तिवर्धक
26.	पंचसकार चूर्ण	गैस/कब्ज नाशक
27.	दर्द निवारक तेल	दर्द निवारक हेतु
28.	गुड़मार चूर्ण	शुगर रोगी के लिए
29.	हर्बल केश पास	बालों मे रूसी रोक थाम हेतु
30.	बहेरा चूर्ण	पाचक के लिए
31.	आंवला केण्डी	मिठा/नमकीन स्वाद के लिए
32.	तिखुर	फरहारी मे साबुन दान के रूप मे उपयोग
33.	दांत दर्द की दवा	दांत रोगी हेतु
34.	बवासीर हर्बटी	बवासीर रोगी के लिए
35.	बेल शरबत	पाचन शक्ति हेतु
36.	कौच चूर्ण	शक्तिवर्धक हेतु
37.	आम का अचार	स्वाद एंवं पाचक के लिए।

स्रोत – कार्यालय वनौषधी विक्रय केन्द्र केंवची

उक्त समूह द्वारा अपना कार्य प्रारंभ वर्ष अर्थात मार्च 2010 से 2012 तक बेची गई हर्बल उत्पादों की सम्मिलित आंकडा निम्नलिखित है :–

सारणी क्र0 2

संजीवनी वनौषधि विक्रय केन्द्र केंवची द्वारा बेची जाने वाली हर्बल उत्पादों की स्थिति

क्र0	माह	उत्पाद विक्रय राशि (रूपये में)		
		2010	2011	2012
1.	जनवरी	–	55,854	48,298
2.	फरवरी	–	48,519	31,237
3.	मार्च	34,918	44,896	38,007
4.	अप्रेल	39,318	24,806	40,121
5.	मई	44,296	33,379	39,510
6.	जून	35,358	20,757	35,942
7.	जुलाई	31,253	5,455	43,806
8.	अगस्त	33,943	38,454	41,680
9.	सितम्बर	31,363	30,781	45,355
10.	अक्टूबर	50,716	34,525	43,465
11.	नवम्बर	37,991	37,596	35,060
12.	दिसंबर	46,263	61,704	61,185

स्रोत – कार्यालय वनौषधी विक्रय केन्द्र केंवच

उपरोक्त आंकडों पर तुलनात्मक रूप से गौर किया जाये तो Fluctuation (उतार–चढ़ाव) की स्थिति को दर्शाता है जिससे किसी भी वर्ष में लगातार विक्रय राशि की कमी या वृद्धि की निरंतरता नहीं पाई गई। विशेष रूप से इसका कारण यथासमय पर्याप्त मात्रा में उत्पादों का उपलब्ध न हो पाना है जिससे विक्रय कार्य प्रभावित होता है साथ ही पर्यटन क्षेत्र होने से पर्यटको का वर्ष भर आवागमन में निरंतरता न होने से भी विक्रय कार्य प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त विभागीय एवं अन्य तकनीकी कारणों से विक्रय कार्य प्रभावित होता है जिसके कारण ऐसी स्थिति निर्मित होती है। इसे निम्न दण्ड आरेख द्वारा इस प्रकार दर्शित किया गया है..

आरेख –संजीवनी वनौषधि विक्रय केन्द्र केंवची द्वारा बेची जाने वाली हर्बल उत्पादों की स्थिति

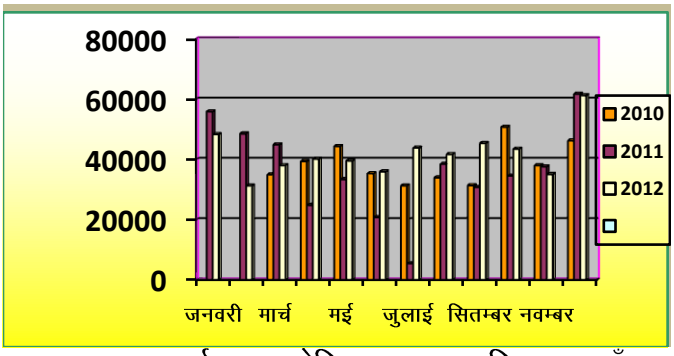

2. NWFP मार्ट या प्रादेशिक स्तर पर विक्रय – माँ नर्मदा वनौषधि प्रसंस्करण केन्द्र केंवची द्वारा प्रसंस्करण की जाने वाली हर्बल उत्पादों का विक्रय NWFP मार्ट एवं जिला यूनियन संजीवनी के माध्यम से की जाती है NWFP मार्ट बिलासपुर को बेची जाने वाली हर्बल उत्पादों की सूची इस प्रकार है :–

सारणी क्रमांक 3

NWFP मार्ट बिलासपुर में बेची गयी उत्पादों का विवरण

क्र0	उत्पाद का नाम	उपयोग
1.	आमलकी चूर्ण	स्वाद एवं पाचक के लिए
2.	अर्जुनतक चूर्ण	महिलाओं के लिए
3.	कालमेघ चूर्ण	मलेरिया के लिए
4.	पंचसकार चूर्ण	गैस कब्ज नाशक
5.	पंचसकार चूर्ण	गैस कब्ज नाशक
6.	शतावरी कल्प चूर्ण	महिलाओं के लिए एवं शक्तिवर्धक
7.	त्रिफला चूर्ण	पाचक के लिए
8.	बायविडिंग चूर्ण	कृमि नाशक के लिए

स्रोत :– कार्यालय NWFP मार्ट बिलासपुर

माँ नर्मदा वनौषधि प्रसंस्करण केन्द्र केंवची द्वारा बेची गई उत्पादों की माहवार एकीकृत जानकारी का विवरण इस प्रकार है :–

सारणी क्रमांक 4
माँ नर्मदा वनौषधि प्रसंस्करण केन्द्र केंवची द्वारा बेची गई उत्पादों की स्थिति

क्र0	माह	उत्पाद विक्रय मात्रा (रूपये)		
		2010	2011	2012
1.	जनवरी	–	2,660	9,060
2.	फरवरी	–	19,000	19,530
3.	मार्च	–	6,498	29,060
4.	अप्रेल	31,200	3,665	Nil
5.	मई	38,652	Nil	Nil
6.	जून	54,55	Nil	56,582
7.	जुलाई	11,750	–	58,660
8.	अगस्त	14,745	–	69,340
9.	सितम्बर	15,522	–	95,560
10.	अक्टूबर	10,142	–	96,410
11.	नवम्बर	34,584	–	59,733
12.	दिसंबर	23,070	–	Nil

स्रोत :– कार्यालय माँ नर्मदा प्रसंस्करण केन्द्र केंवची।

उक्त सारणी से परिलक्षित होता है कि विगत 03 वर्षो से प्राप्त आंकडे वर्ष भर संस्था की विक्रय स्थिति नहीं दर्शाते जिसका कारण संस्था का प्रारंभिक चरण एवं पर्याप्त संसाधन व धन का अभाव जैसे बुनियादी कारणों से है साथ ही प्रारंभ मे रिकार्ड व्यवस्थित नहीं होने से आवश्यक आंकड़े उपलब्ध नहीं हो पाया। इसे निम्न दण्ड आरेख द्वारा इस प्रकार दर्"ाित किया गया है..

आरेख – माँ नर्मदा वनौषधि प्रसंस्करण केन्द्र केंवची द्वारा बेची गई उत्पादों की सूची

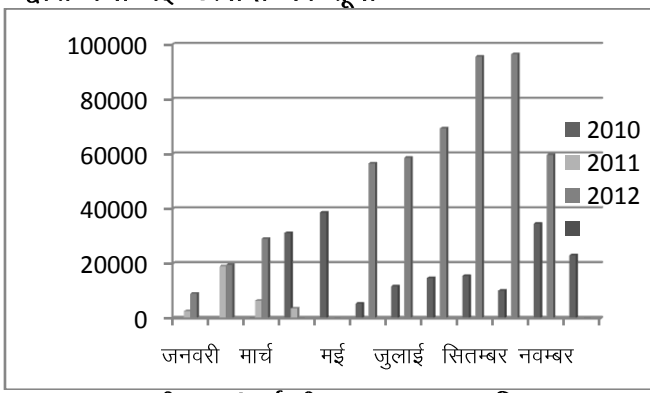

राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विक्रय – केंवची मे निर्मित एवं प्रसंस्करित हर्बल उत्पादों का राष्ट्रीय स्तर अर्थात अन्य प्रदेशों का प्रत्यक्ष तौर पर विक्रय नहीं किया जाता बल्कि NWFP मार्ट के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर औषधि उत्पादों का विपणन किया जाता है इस संबंध में विशेष उत्पाद के विक्रय की जानकारी उपलब्ध नहीं हो सका है। राष्ट्रीय स्तर पर हर्बल उत्पादों का विपणन कार्य में निरंतरता नहीं पायी गई। फलतः **अंतराष्ट्रीय स्तर** पर हर्बल उत्पादों का विपणन का अभाव पाया गया है।

संभावनाएँ एवं निष्कर्ष :–

औषधी उत्पादों की उपयोगिता हमारे जीवन में सृष्टिकाल से बनी हुई है, इसकी महत्ता एवं उपयोगिता न केवल छत्तीसगढ़ में बल्कि सार्वभौमिक है। इसका प्रमाण हर्बल उत्पादों के बाजार में निरंतर हो रहे विकास व विस्तार से है। जो लगातार एलोपैथिक दवाओं का स्थान ले रहा है। इस दि"ाा में छ.ग. शासन द्वारा प्रदे"ा के औषधी उत्पादों के व्यावसायिक कारोबार को बढ़ाने हेतु व्यापक स्तर पर कार्य किया गया है। इस क्रम में प्रदे"ा में छ.ग. लघु–वनोपज (व्यापार एवं विकास) संघ मर्यादित रायपुर, संस्थान की स्थापना है। इसके अतिरिक्त प्रदे"ा की औषधी पादपों की पहचान एवं औषधी उपयोगिता व उनका विकास, विना"ा विहीन विदोहन, संरक्षण के उद्दे"य से छ.ग. औषधी पादप बोर्ड रायपुर की स्थापना है। सरकार का यह प्रयास नि"चत तौर पर सराहनीय है।

अध्ययन क्षेत्र में निवासरत व्यक्तियों एवं स्व–सहायता समूह जो औषधी उत्पादों के कारोबार में संलग्न है। इन्हें उचित आर्थिक सहायता प्रदान कर पूंजी आभाव की समस्या को कम किया जा सकता है। इससे संबंधितों की आर्थिक विकास में सहयोग के साथ–साथ औषधी उत्पादों के विकास विस्तार व संरक्षण की दि"ाा में सहायक होगा। यद्यपि इस क्षेत्र मे प्रबल रोजगार की संभावनाओं के संदर्भ में अनेक प्रयास किये गये है तथापि इस दि"ाा में अभी बहुत कुछ विकास की संभावनायें विद्यमान है, जिन्हें सरकार के साथ–साथ समाज सेवी संगठनों, पर्यावरणविदो, वैद्यो, जन साामन्य एवं स्थानीय निवासियों के सम्मिलित सहयोग से इस क्षेत्र के साथ–साथ प्रदे"ा मे वनऔषधि के विपणन कार्य को और अधिक विस्तारित एवं सुव्यवस्थित ढंग से संचालित किये जा सकते है। जो प्रदे"ा सरकार की छ.ग. राज्य को हर्बल स्टेट की संज्ञा की सार्थकता को सिद्ध करने मे महत्वपूर्ण एवं सराहनीय कदम होगी।

समस्याएँ :–

1. औषधि उत्पादों की उचित मात्रा में व समय पर अनुपलब्धता।
2. आव"यक वित्त (पूंजी) की कमी।
3. औषधि उत्पादों के प्रति लोगों में जन जागरूकता एवं जानकारी का अभाव।

संदर्भ :–

1. भदादा बी.एल. पोखर बी.एल 2004 ''विपणन प्रंबध'' रमे"ा बुक डिपो, जयपुर।
2. जैन, एस.सी. 1998 ''विक्रय प्र"ाासन एवं प्रंबंध'' साहित्य भवन, आगरा।
3. कपिल एच.के. 1996–97 ''अनुसंधान विधियॉ'' हरप्रसाद भार्गव प्रका"ान, आगरा।
4. शुक्ला डॉ. विद्याधर एवं त्रिपाठी रविदत्त 1998 ''आयुर्वेद का इतिहास एवं परिचय'' एवं चौखंभा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
5. छ.ग. लघु वनोपज संघ (व्यापार एवं विकास) मर्यादित, रायपुर।